Read India
An Imprint of Pratham Books

राजू और तरकारी

वैंकटरमन गौडा
पद्मनाभ

RGF Pratham
SERIES

Original Story (*Kannada*) Shaalege Banda Tharakarigalu by Venkatramana Gowda
© Rajiv Gandhi Foundation – Pratham Books, 2004

Third Hindi Edition: 2009

Illustrations & Design: Padmanabh
Hindi Translation: K. Vijaya

ISBN : 81-8263-140-8

Registered Office:
PRATHAM BOOKS
633-634, 4th "C" Main, 6th 'B' Cross, OMBR Layout,
Banaswadi, Bangalore 560 043
✆ 080-25429726 / 27 / 28

Regional Offices: Mumbai ✆ 022-65162526 and New Delhi ✆ 011-65684113

Typesetting and Layout by: Pratham Books, Delhi

Printed by: Pentaplus Printers Pvt. Ltd., Bangalore

Published by:
Pratham Books
www.prathambooks.org

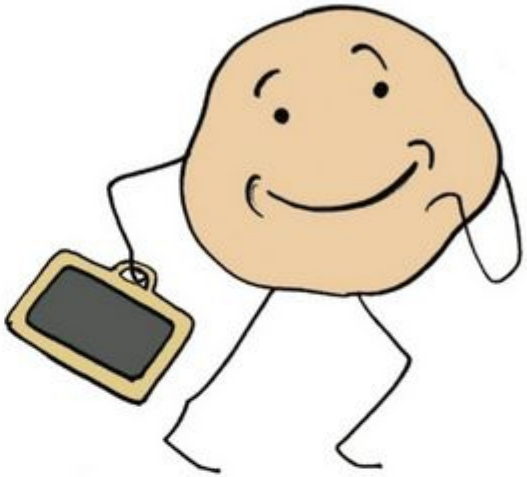

Some rights reserved. This book is CC-BY-3.0 licensed.
Full terms of use and attribution available at:
http://www.prathambooks.org/cc

राजू और तरकारी

लेखन : वैंकटरमन गौडा

चित्रांकन : पद्मनाभ

हिन्दी अनुवाद : के. विजया

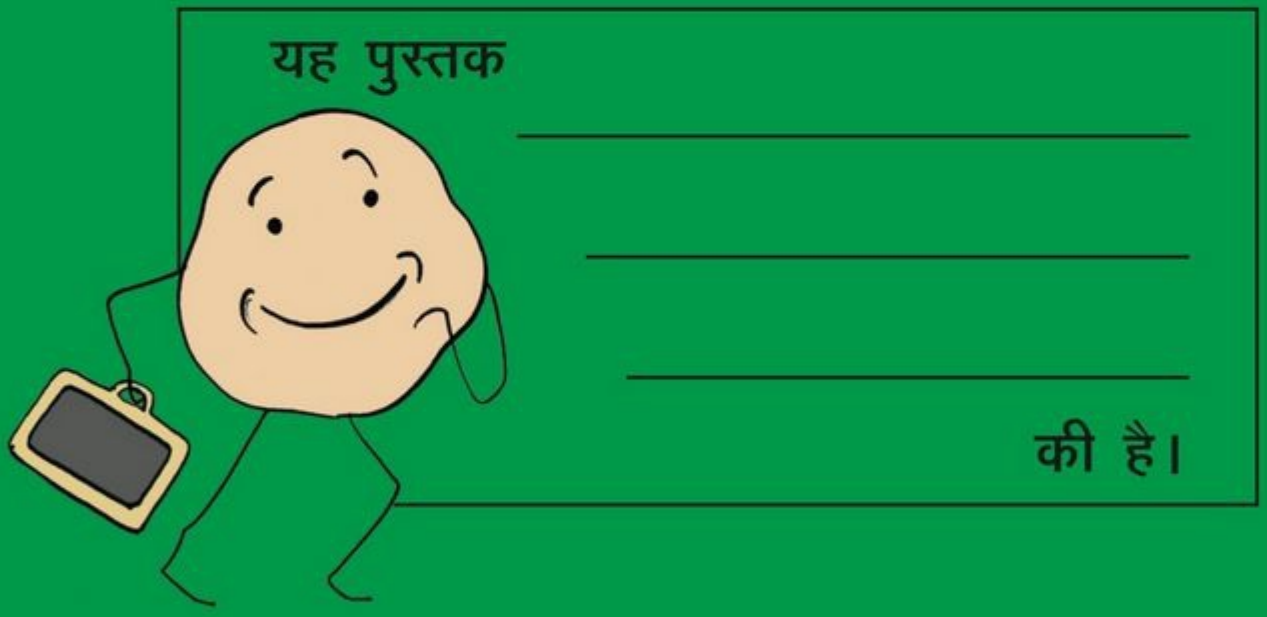

२

रोज़ की तरह राजू स्कूल जा रहा था। रास्ते में उसने एक अनोखा दृश्य देखा। बस्ता लटकाए कुछ विचित्र आकार उसके आगे आगे जा रहे थे।

उसने बाज़ार में तरकारियों को देखा था, ये वैसे ही दिखाई दे रहे थे। उन्हें देख वह अपनी उत्सुकता रोक नहीं पाया।

उसने जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाए। वह उन्हें करीब से देखना चाहता था। वे सभी आकार बड़े तन्दुरुस्त दिख रहे थे। फ़ौज के जवानों की तरह कदम मिला कर चल रहे थे।

आखिरकार राजू उनके करीब पहुँच गया।
उनका चेहरा देखा तो बड़ा अचरज हुआ।

वे तरह-तरह की शाक-सब्ज़ी-तरकारियाँ थीं,
जो उसने बाज़ार में देखी थीं।

आश्चर्य में उसके मुख से निकला, ''अरे! आप?''

उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। आपस में
एक-दूसरे का चेहरा निहारने
लगे। फिर मुस्कराते हुए
राजू की ओर देखा।

राजू ने सवाल किया, ''कहाँ जा रहे हैं?''
जवाब में उन्होंने कहा, ''और कहाँ?
तुम्हारे स्कूल जा रहे हैं।''

एक साथ सभी आवाज़ मिलाकर बोले तो
ठंडी हवा की सिहरन सी महसूस हुई।
राजू को बहुत मज़ा आया।

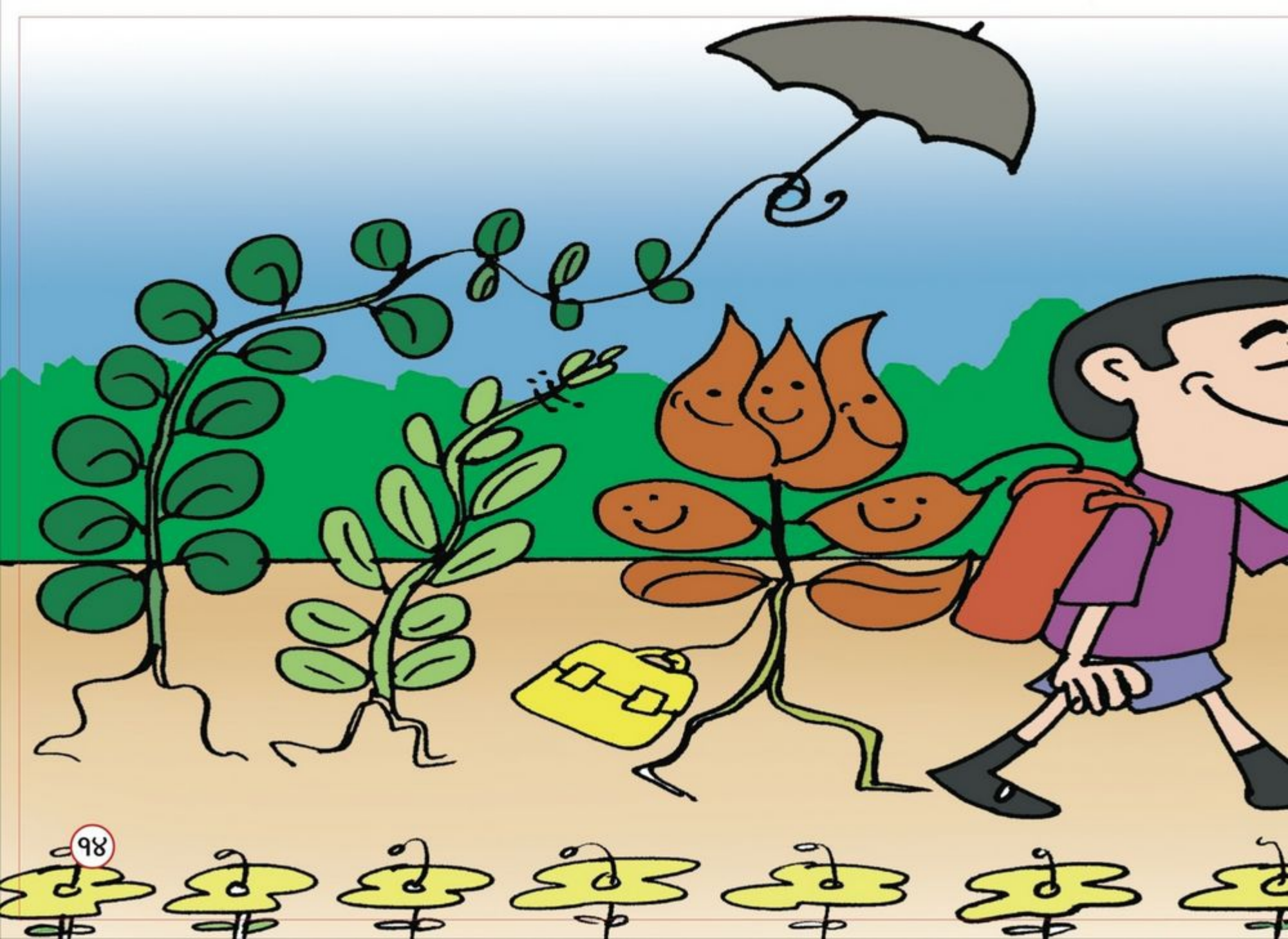

उन लोगों से बातचीत करते हुए राजू आगे चला। पता नहीं क्यों, कुछ देर बाद उसने पीछे मुड़ कर देखा। आश्चर्य! उसके पीछे-पीछे सभी तरह की हरी तरकारियाँ कंधे पर बस्ता लटकाए बड़े अनुशासन के साथ चली आ रही थीं।

उसके आगे आलू, शकरकंद, सूरन आदि ज़मीन
के नीचे उगने वाली तरकारियाँ कतार में,
उसके पीछे हरी सब्ज़ियाँ कतार में
और बीच में अपना राजू - उसकी
खुशी का ठिकाना न रहा।
१६

उन्हीं के साथ वह स्कूल की ओर चला। वहाँ पहुँचते ही सभी लोग तरकारियों के साथ आये राजू को फैली हुई आँखों से देखते रह गये।

टीचर ने आकर खुशी से ''बहुत अच्छे,'' कहकर उसकी पीठ थपथपाई। ''शुक्रिया टीचर,'' कहते हुए राजू मुस्कराया।

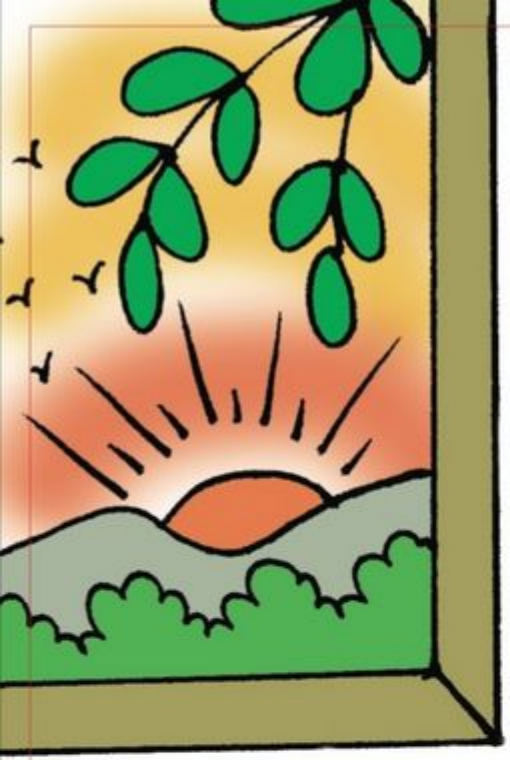

कुछ ज़ोर से पीठ पर थपथपाहट हुई तो राजू ने आँखें खोलीं, ''स्कूल के लिए देरी हो जाएगी, उठो।'' आवाज़ देते हुए छोटा भाई पीठ थपथपा रहा था। अरे! सपना था क्या? यह सोचकर वह आँख मलने लगा।

पर आज राजू था बहुत खुश!

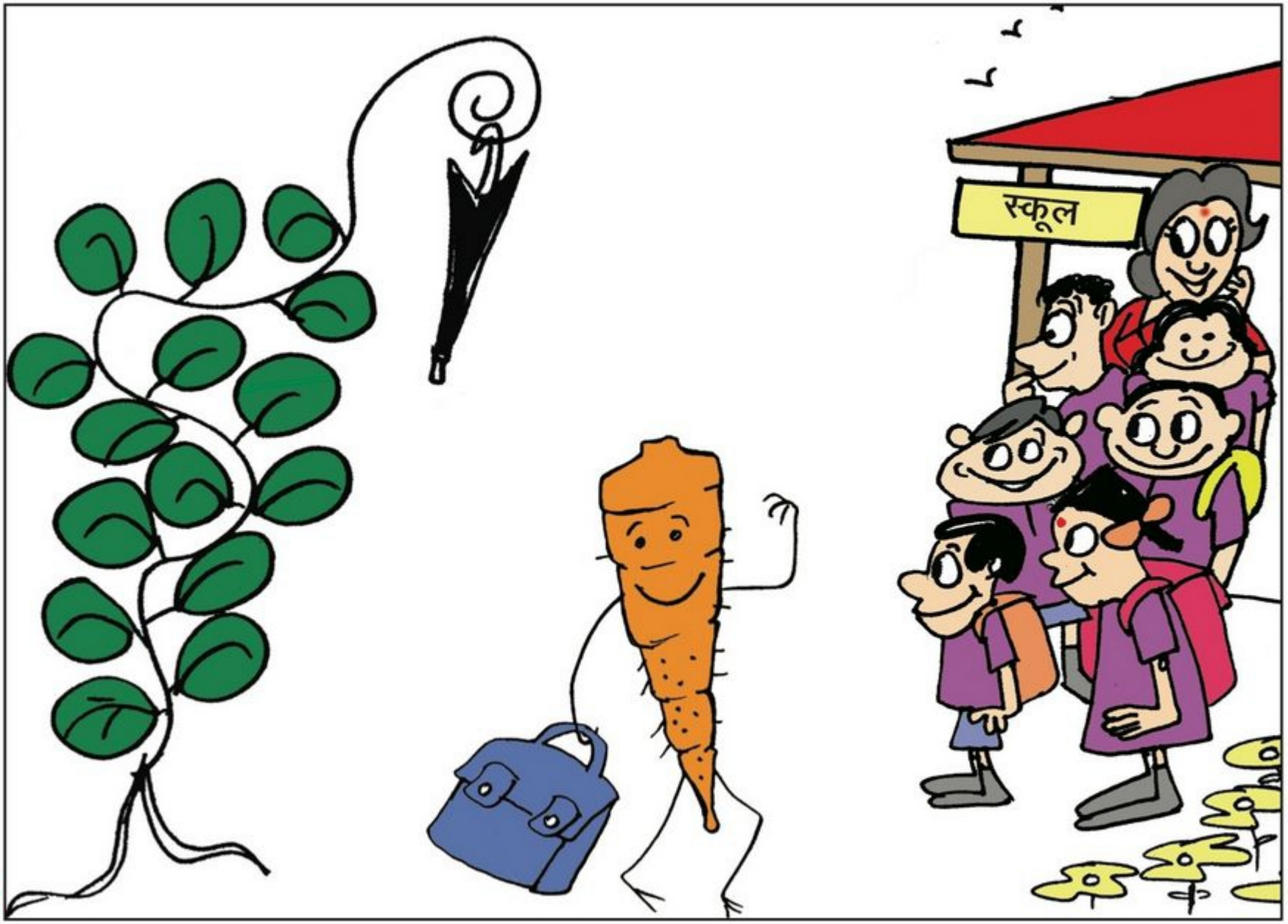
स्कूल

इस चित्र में रंग भरो।

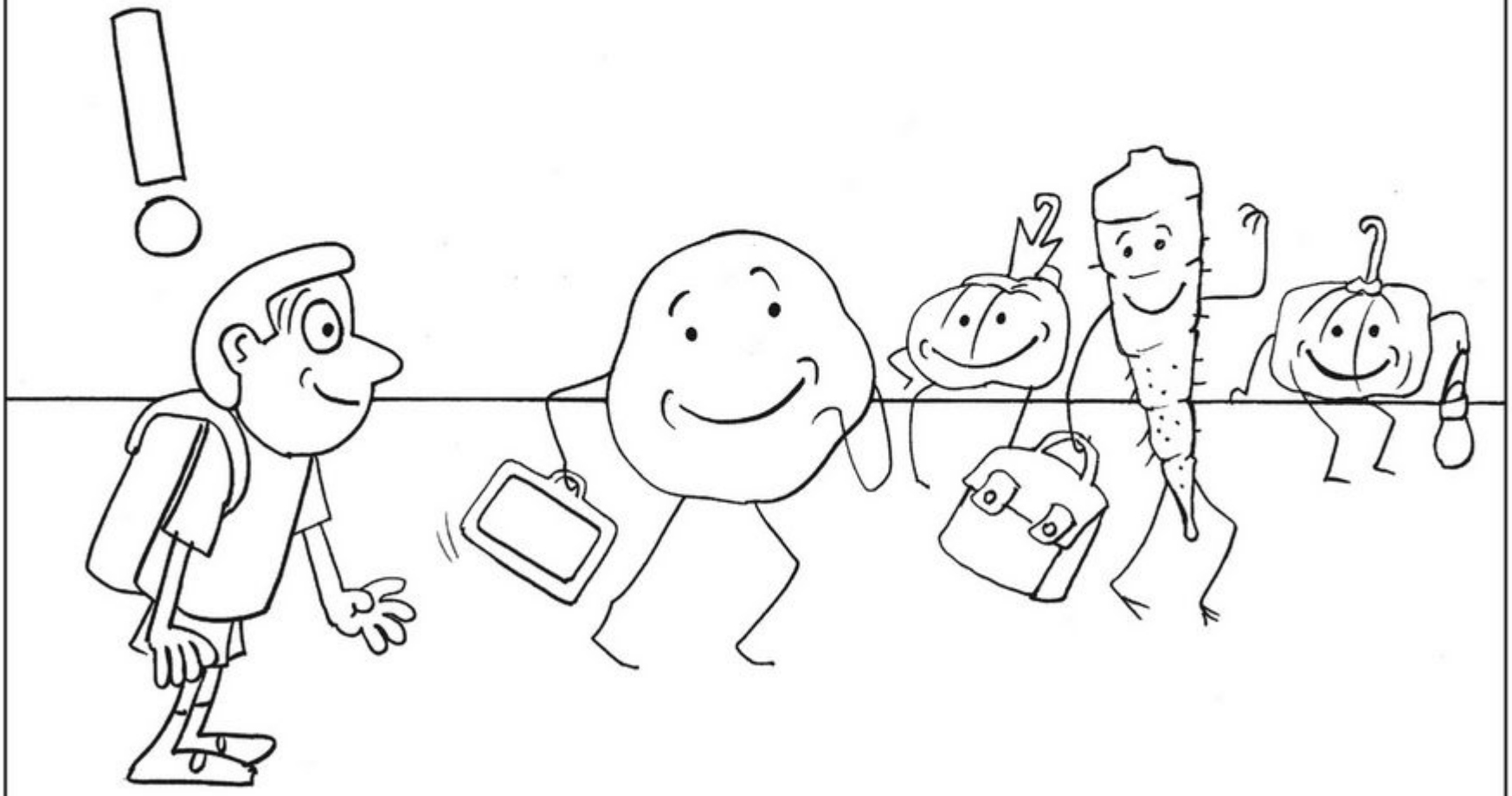

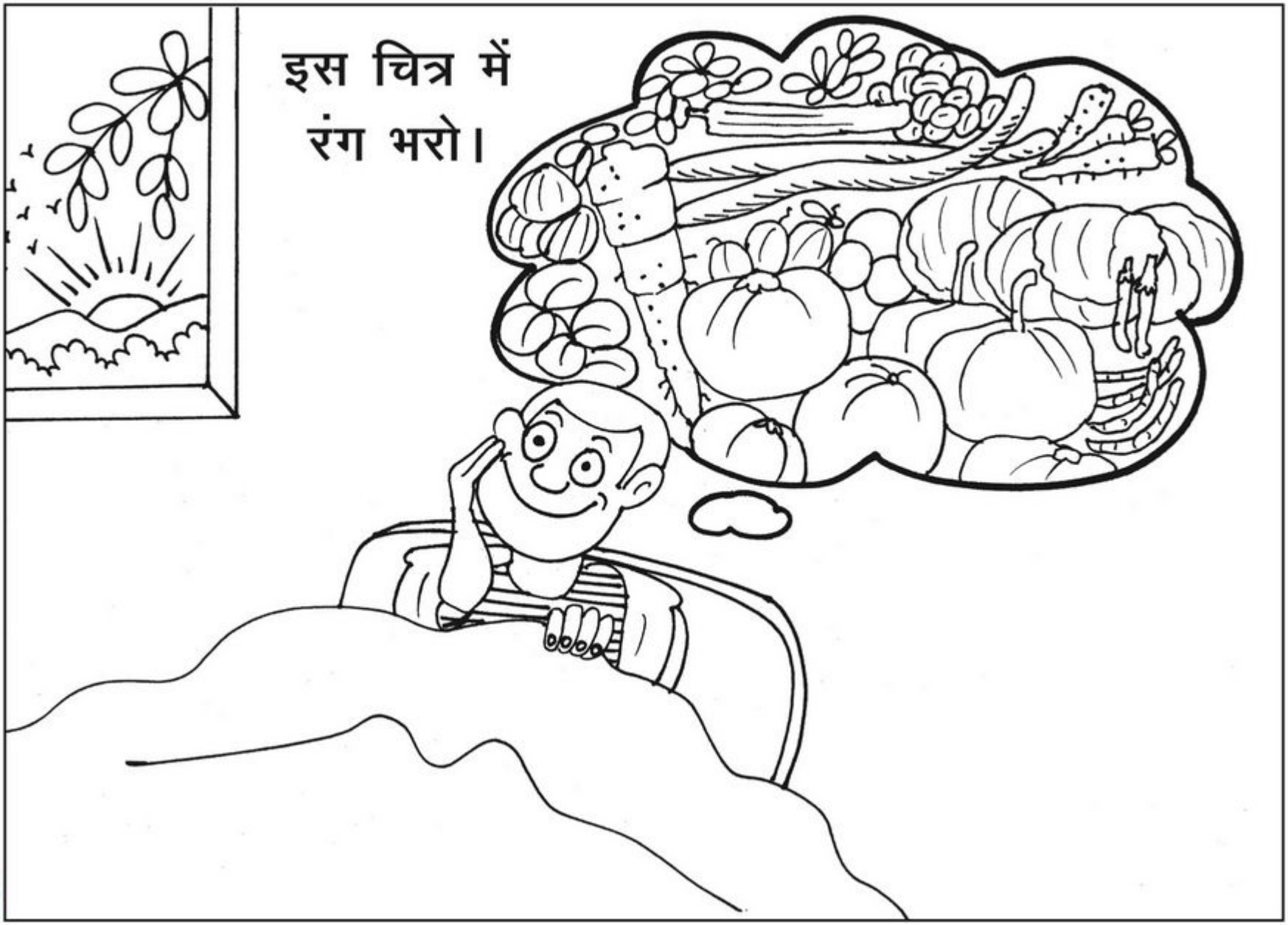
इस चित्र में
रंग भरो।

मेरा नाम अंजली है और खेल में सबसे आगे रहती हूँ। खेलने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है। कॉमिक की किताबें मुझे अच्छी लगती हैं।
यह किताब खरीदने के लिये शुक्रिया। आपने यह किताब खरीदी तो मेरे पुस्तकालय में और भी बहुत सी किताबें आयेंगी जिन्हें मैं और मेरे दोस्त पढ़ सकेंगे।

वेंकटरमण गौड़ ने कन्नड़ में उच्च शिक्षा प्राप्त करी है और वे एक वरिष्ठ पत्रकार हैं। उन्होंने उदयवाणी व विजय कर्नाटक में काम किया है और कुछ समय तक अपनी मासिक पत्रिका का सम्पादन किया। उत्तर कन्नड़ में हलक्की जनजाति के वेंकटरमण अपनी कहानियों व कविताओं में लोक शैली के लिये जाने जाते हैं। वे हैदराबाद में एक टेलिविज़न चैनल में कार्यरत हैं।

पद्मनाभ एक चित्रकार हैं जिन्होंने कर्नाटक के कई समाचार पत्रों में काम किया है।

स्कूल के रास्ते में राजू को तरह-तरह की सब्ज़ियाँ बस्ता लटकाये दिखाई देती हैं ! राजू के अलावा कोई उन्हें देखकर हैरान भी नहीं होता ! यह क्या हो रहा है?

इस शृंखला की अन्य पुस्तकें

नौका विहार • मछली ने समाचार सुने • गौरैया और अमरूद
रंग बिरंगी सुंदर मछली • कौए के रिश्तेदार • कुहू–कुहू कोयल
कछुआ और खरगोश • स्वाद अनार का • बुलबुलों वाला फेनीला दूध

अनेक भारतीय भाषाओं में हमारी रोचक किताबों के बारे में और जानकारी के लिये www.prathambooks.org पर लॉग आन करें।

हमारी किताबें अंग्रेज़ी, हिंदी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मराठी, गुजराती, बांग्ला, पंजाबी, उर्दू व उड़िया में भी उपलब्ध हैं।

PRATHAM BOOKS

प्रथम बुक्स भारतीय भाषाओं में वाजिब दामों व अच्छे स्तर की बाल पुस्तकें प्रकाशित करने वाली ग़ैर मुनाफ़ा संस्था है।

ISBN 818263140-8
9788182631403

Age Group: 7-10 years
Raju Aur Tarkari (Hindi)
MRP: Rs. 20.00